शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

विज्ञान के साथ अहिंसा

विनोबा

हिन्दुस्तान की आध्यात्मिक संस्कृति पर ज्यों ही पश्चिम के विज्ञान का रंग चढ़ा, त्यों ही उसमें एक नया विचार निर्माण हुआ, जिसे हम सामूहिक अहिंसा कहते हैं। यह हिन्दुस्तान के आध्यात्मिक विचार और पश्चिम के विज्ञान के संयोग से हुआ। जहां आत्मा के दर्शन, वहां हमारे जीवन में न्यूनाधिक परिमाण में अहिंसा आ ही जाती है। पश्चिम के विज्ञान और हिन्दुस्तान के अध्यात्म के संयोग से सामूहिक अहिंसा का आविर्भाव हुआ और हमने अहिंसा से स्वराज्य प्राप्त किया।

विज्ञान युग बहुत तेजी से आ रहा है। मनुष्य को पृथ्वीभर को अपना क्षेत्र मानने में संतोष नहीं है। वह दूसरे ग्रहों पर भी जाना चाहता है और उसके साथ संपर्क रखने की दृष्टि रखता है। चार सौ साल पहले कोलंबस जैसे शोधकों ने अमेरिका को ढूंढा और सारी पृथ्वी की प्रदक्षिणा कर काफी खोज की। परंतु यह सारी खोज पृथ्वी पर ही थी और उसके परिणामस्वरूप उन्होंने नया जगत भी देखा। चार सौ साल पहले जो जिज्ञासा सारी पृथ्वी की खोज करने की थी, वही अब पृथ्वी के बाहर की दूसरी पृथ्वी के साथ संपर्क करने तक बढ़ गयी है। मानव उससे संपर्क साधने के लिए अनेक प्रयोग कर रहा है। हमें यह एक बहुत बड़ी प्रगति मानना चाहिए। अब अभिनव विज्ञान युग शुरू हो गया है। आज मानव में जहां एक ओर स्थूल को छोड़कर अत्यंत सूक्ष्म अणु में प्रवेश करने की वृत्ति है वहीं दूसरी ओर विराट् में प्रवेश करने की भी वृत्ति है। विराट् और अणु दोनों में प्रवेश करने की वृत्ति आनेवाले अभिनव विज्ञानयुग की है। उसी से यह प्रगति हो रही है और नये-नये औजार भी बन रहे हैं। आगे जाकर एक-एक गांव में पूरी मानव-संस्कृति का दर्शन भी हो सकता है। अगर स्पर्धावाली समाज रचना को कायम रखना हो तो विज्ञान की प्रति न सिर्फ रोकनी पड़ेगी, बल्कि वैज्ञानिकों पर अंकुश भी रखना पड़ेगा। अगर अंकुश से ज्यादा आगे जायेंगे, तो कानून के विरुद्ध हो जायेगा। परंतु अगर हम विज्ञान की प्रगति को निरंकुश मौका देना चाहते हैं और उसकी गति रोकना नहीं चाहते, तो हमें विज्ञान के साथ अहिंसा का संबंध जोड़ना होगा। तभी हम सब तरह से सुरक्षित हो सकते हैं। हमारा अनुभव है, उसे भी हमें देखना चाहिए। हमारा अनुभव अहिंसा का है, जो हमें प्राचीन काल से प्राप्त है। हमारा अनुभव यही है कि हिंसा से कुछ नहीं होता। मनु ने कहा है - **अधर्मेण एधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति। ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति।** यानी अधर्म से राष्ट्र की भौतिक उन्नति होती है, बहुत बड़े-बड़े सुख भी उसे हासिल होते हैं एक तरह से वह देश सुखी बन जाता है, लेकिन उसके बाद उसका समूल नाश होता है। यह हमारे देश का अहिंसा का अनुभव है। इसलिए अपना यह अहिंसा का अनुभव और वैज्ञानिक जमाने का सामूहिक पुरुषार्थ दोनों लेकर हम काम करेंगे, तभी भारत खड़ा होगा। **विनोबा साहित्य खण्ड - 12**